प्रकाशन तिथि : 01 जून, 2024
प्रेषण तिथि : 04 जून, 2024
'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 06 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिकः रुपए 150/-

पूज्य तनसिंह जी के भावों को समझें तो संघ को समझ जाएंगे: संरक्षक श्री

(गांधीनगर, गुजरात में युवकों के उच्च प्रशिक्षण शिविर का आयोजन)

आप में अनेकों बार जो शिविर में आए हैं, इसलिए ऐसा स्वागत कार्यक्रम पहले भी देख व सुन चुके हैं। यही गीत, यही कार्यक्रम आपने अनेकों बार सुने हैं। इन गीतों में, इन भावों में पूज्य तनसिंह जी ने वह प्रेरणा भर दी है कि और कुछ कहना आवश्यक नहीं लगता। इतने गीत लिखे हैं पूज्य तनसिंह जी ने, यदि उनके भाव और अर्थ को हम समझ लें तो संघ को भी समझ जाएंगे, जिसके लिए हम यहां आए हैं। पूज्य तनसिंह जी के लिए सदैव संघ प्राथमिकता में रहा, चाहे वे राजनीति करते रहे हों, व्यवसाय करते रहे हों, परिवार का पालन करते रहे हों या अन्य किसी कार्य में लगे हों, उनके लिए संघ ही सदैव प्राथमिक रहा। हमें भी नौकरी, व्यवसाय, परिवार का पालन, विद्याध्ययन आदि सभी कार्य करने पड़ेंगे लेकिन संघ सदैव हमारी प्राथमिकता में रहें, संघ हमें सदैव स्मरण रहे। संसार में जो कुछ भी है वह सब विनाशधर्मी है, नष्ट होने के लिए हैं, यदि उसे संभाला नहीं जाए। हमारे पास रियासतें थीं, गढ़ और महल थे, लेकिन हम उन्हें संभाल नहीं पाए तो वह हमारे पास नहीं रहे, नष्ट हो गए। हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ मिला है, उसे संभाल कर रखना है लेकिन उसके मालिक नहीं बनना है। मालिक बन गए तो संभाल नहीं पाएंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(काणेटी में मातृशक्ति माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन)

संघ शिक्षण से तेजस्वी बनेगा व्यक्तित्व: हरदासकाबास

श्री क्षत्रिय युवक संघ का यह शिविर एक ऐसा यज्ञ है जिससे प्राप्त ऊर्जा तेज के रूप में आपके व्यक्तित्व का अंग बन जाएगी। लेकिन इससे पहले आपको इस यज्ञ की अग्नि में आहुति डालनी होगी। वह आहुति है आपकी एकाग्रता, दक्षता, मनोयोग और निष्ठा। केवल शिविर में मिल रहे शिक्षण को ग्रहण करने में ही आप अपनी पूरी क्षमता लगाएंगी तो यह शिक्षण आपके व्यक्तित्व का अंग बनकर उसे तेजस्वी बना देगा। आपके व्यक्तित्व का तेज ही आने वाली पीढ़ी को भी तेजस्वी बना सकता है क्योंकि तेजस्वी माता से ही तेजस्वी संतान का जन्म हो सकता है। उपर्युक्त बात गुजरात में अहमदाबाद जिले के

काणेटी गांव में स्थित प्राथमिक शाला में आयोजित मातृशक्ति माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन शिविर संचालिका जागृति बा हरदासकाबास ने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संघ की संस्कारमयी कर्म प्रणाली में से गुजरकर ही हम अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान सकती हैं कि हम क्षत्रिय है। उस रूप को पहचानकर हमें उसमें नई कल्पना से रंग भरना होगा अर्थात वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप अपने क्षात्रधर्म का पालन करना होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन शिविरों के माध्यम से हमें हमारे उसी कर्त्तव्य का भान करा रहा है, उसके पालन का अभ्यास करवा रहा है। उन्होंने कहा कि यहां हमें अन्यों के शिक्षण का नहीं केवल स्वयं के शिक्षण का ध्यान रखना है। पूज्य तनसिंह जी ने कहा है कि - चाहे एक ही जले, पूरे स्नेह से जले, ऐसे दीप चाहिए। हम भी अपनी पूरी क्षमता से संघ के बताए मार्ग पर चलना शुरू कर देंगी तो हमारा जीवन भी दीपक की भांति प्रकाशित होकर स्वतः ही दूसरों के लिए प्रेरणास्पद बन जाएगा। 23 मई को यह सात दिवसीय शिविर वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा एवं जोरावर सिंह भादला के सान्निध्य में प्रारंभ हुआ।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'मेरी साधना' के क्रमिक सोपानों का किया विवेचन

इसी सत्र में बालिका शिविर में हमारी दिनचर्या, सामाजिक बुराइयां, अतीत के परिपेक्ष्य में आधुनिक नारी, नारी के सद्‌गुण एवं रक्त की पवित्रता व वंश परंपरा विषयों पर परिचर्चा आयोजित की गई।

उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिदिन 8:45 से 9:45 बजे तक समास्या का सत्र हुआ जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय श्री आयुवान सिंह जी हुडील द्वारा लिखित पुस्तक 'मेरी साधना' पर चर्चा की गई जिसमें साधना के मार्ग पर चलते समय आने वाले विभिन्न सोपानों से शिविरार्थियों को अवगत कराया गया। चर्चा में बताया गया कि साधक के भीतर सबसे पहले अहंभाव का अनेक दिशाओं में चलने वाली आकांक्षाओं से संयोग होता है। उसी से प्रेरित होकर वह चलने का प्रयत्न करता है लेकिन लक्ष्य की अस्पष्टता और अनुभव की कमी के कारण सफल नहीं हो पाता। फिर भी कर्मरत होने की चाह में वह मार्ग ढूंढता है। तब उसके सामने तात्कालिक सफलता आदि का प्रलोभन लिए कई ध्येय आदर्श बन कर आते हैं। उनमें फंसने पर साधक को भटकना पड़ता है और निराश होकर आत्मविसर्जन और कर्म त्याग की ओर उन्मुख होता है। किंतु चिंतनशील साधक के भीतर का सत्व उसे और अधिक प्रयत्न करने के लिए प्रेरित करता है। प्रयत्नशील होने पर उसे अपने भीतर साध्यज्ञान की अनुभूति होती है। वह साध्य है उसका स्वधर्म, उसका कर्त्तव्य। कर्त्तव्य ज्ञान ही साध्यज्ञान है। यद्यपि यहां तर्क उसे भटकाने का प्रयास करता है लेकिन जब वह साध्य के प्रति अनन्यता का भाव रखकर आगे बढ़ता है तब तर्क को श्रद्धा और विश्वास का सहगामी बनना पड़ता है। आगे बढ़ने पर साधना में सहायक और बाधक तत्वों की पहचान भी उसे होने लगती है। साधक का सबसे बड़ा शत्रु उसका अहंकार है जिसका उत्पत्ति स्थल कर्तापन की भावना है। इससे बचने का उपाय यही है कि साधक सदैव समर्पण की भावना से कार्य करता रहे। निंदा और स्तुति से ऊपर उठकर ही अहंकार को बलहीन किया जा सकता है। आगे बताया गया कि स्वार्थ भी साधना का विकट शत्रु है जो साधक को ध्येय से च्युत कर देता है। स्वार्थ को रूपांतरित करके सामाजिक महत्वाकांक्षा में मिलाना होगा। कृपणता से उपजी कायरता को त्यागकर वीरता से उपजी उदारता को जब साधक अपनाता है तो उसमें उत्साह जा संचार होता है। उत्साह ही साधना का जीवन-मंत्र और साधक के जीवन की प्रबल प्रेरकशक्ति है। उत्साह के अभाव में साधना निष्प्राण हो जाती है, इससे बचने के लिए विभाजक तत्वों का विनाश आवश्यक है। साधना का सबसे महत्वपूर्ण आधार अभ्यास है क्योंकि वही शरीर, मन और आत्मा को संस्कारों के सांचे में ढालता है। साथ ही साधना के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण भी साधक को करना होता है। उपरोक्त सभी आवश्यकताएं पूरी होने पर ही साधना का बीजारोपण भावना की उर्वरा भूमि में होता है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

बौद्धिक सत्र में समझा संघ का मूलभूत दर्शन

बालिका शिविर में बौद्धिक सत्र के दौरान हमारा ध्येय, हमारा मार्ग, लोक संग्रह, सोलह संस्कार और संघ व हमारा गौरवशाली इतिहास विषय पर प्रवचन दिए गए।

उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन 3:30 से 5:40 बजे तक चलने वाले बौद्धिक सत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ के मूलभूत दर्शन से शिविरार्थियों को परिचित कराया गया। इन प्रवचनों में संघ-साधना के आधारभूत सिद्धांत और उनके तार्किक आधार, उन सिद्धांतों को व्यवहार में उतारने के उपाय, मार्ग में आने वाली बाधाएं व चुनौतियां, संघ के साधना मार्ग की वैज्ञानिकता आदि को विस्तार से शिविरार्थियों को समझाया गया। पूज्य तनसिंह जी द्वारा शिविरों में दिए गए प्रवचनों को श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा द्वारा संकलित किया गया, वे ही संकलित प्रवचन बौद्धिक के सत्र में अनुभवी शिक्षकों द्वारा समझाए जाते हैं। 19 मई को 'हमारा उद्देश्य और मार्ग' विषय पर दिए गए बौद्धिक में बताया गया कि जो वस्तु जिस उद्देश्य के लिए अस्तित्व में आई है, उसी उद्देश्य की पूर्ति में उसका सदुपयोग है। हमें भी अपने उद्देश्य की स्पष्ट पहचान होनी चाहिए तभी हम उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी शक्ति को पूंजीभूत कर पाएंगे। परमेश्वर की इच्छा से ही हमारा जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ है। इसलिए हमारा उद्देश्य है - क्षात्रधर्म का पालन। यही श्री क्षत्रिय युवक संघ का भी उद्देश्य है जिसे प्राप्त करने के लिए मार्ग है संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली। 20 मई को 'लोकसंग्रह' विषय पर प्रवचन हुआ जिसमें कहा गया कि हमने जो उद्देश्य निश्चित किया है उसके लिए संगठन का निर्माण करना आवश्यक है। सच्चे संगठन के निर्माण की प्रक्रिया ही लोकसंग्रह है। लोकसंग्रहकर्त्ता में ध्येयनिष्ठा और तपोबल के गुण होने पर ही वह समाज को प्रभावित कर सकता है और उसे अपने बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का लोकसंग्रह केवल कुछ समय के लिए नहीं है बल्कि जीवन भर के साथ के लिए है। 21 मई को 'अधिकारी साधक' विषय पर हुए प्रवचन में बताया गया कि महान उद्देश्य और सरल मार्ग होने पर भी वे तब तक महत्वहीन रहते हैं जब तक उन पर चलने वाला कोई साधक न हो। श्री क्षत्रिय युवक संघ को भी अपने मार्ग पर चलने के लिए अधिकारी साधकों की आवश्यकता है। संघ के सच्चे अधिकारी साधक में रक्त की पवित्रता, स्वेच्छा, उत्साह, निर्दोष विनिमय, द्वेषरहितता और आकुतन की समानता की विशेषता होनी चाहिए। 22 मई को 'हमारा ध्वज' विषय पर प्रवचन हुआ जिसमें साकार और निराकार उपासना को समझाया गया। पूज्य केसरिया ध्वज को हमारी संस्कृति, हमारी परंपराओं, हमारे पूर्वजों के बलिदानों और क्षात्रधर्म का प्रतीक बताते हुए उसे संघ के सर्वोच्च नेता के रूप में मानकर पूरा सम्मान देने की बात कही गई।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संघदर्शन के भावात्मक आधार सहगीतों का किया अर्थबोध

इस सत्र में बालिका शिविर में आराम कहां, राह मिल गई, मखमल पर जो सोते हैं, देता रहे जीवन ज्योति एवं भुलाये ना भूले सहगीत का अर्थबोध कर पूज्य तन सिंह जी के भावों को अनुभूत करने का प्रयत्न किया गया।

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित सहगीत श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन के भावात्मक आधार हैं। स्वयंसेवक में भावधारा की सृष्टि करने और संघ मार्ग पर बढ़ते समय उसके हृदय में उठने वाले विभिन्न प्रकार के भावों को समझने एवं मार्गदर्शन देने में सहगीत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन 11:15 से 12:15 बजे तक झनकार में संकलित विभिन्न सहगीतों का भावार्थ 'अर्थबोध' सत्र में किया गया जिसमें स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य तनसिंह जी के भावों को समझने का प्रयास किया गया। 19 मई को 'कदम तुम्हारे' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि काल की उपेक्षा करने वाला स्वयं ही काल का शिकार बन जाता है इसलिए काल की मांग को पूरा करने के लिए बिना हिचकिचाए कर्त्तव्य पालन में लग जाना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ नए युग का निर्माण कर रहा है जिसमें हमें भी कदम से कदम मिलाकर सहयोगी बनना है। 20 मई को 'देता रहे जीवन ज्योति' गीत के माध्यम से कर्त्तव्य पथ पर अपना सर्वस्व अर्पित करने और अन्यों को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने की बात कही गई। संघ मार्ग पर बिना शिकायत और निर्लिप्त भाव से चलते रहने से ही हमारा जीवन सभी के लिए प्रेरणास्पद बनेगा, यह भी समझाया गया। 21 मई को 'दिया जले' सहगीत का अर्थबोध किया गया जिसमें समाज की वर्तमान पतनोन्मुख स्थिति के कारणों का वर्णन किया गया। इस स्थिति के कारण उपजी तनसिंह जी की पीड़ा और उस पीड़ा के निवारण के लिए पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए मार्ग पर चर्चा हुई। 22 मई को 'मेरा मस्तक' गीत पर चर्चा में बताया गया कि पूज्य केसरिया ध्वज हमारे पूर्वजों द्वारा क्षात्रधर्म का पालन करते हुए किए गए बलिदानों का प्रतीक है। इसीलिए केसरिया ध्वज के प्रति हमारी श्रद्धा स्वाभाविक है। इस श्रद्धा से हमारे हृदय में भी कर्त्तव्य पालन की भावना का जागरण होता है। 23 मई को 'हंसती है जग की होनी' गीत पर चर्चा में बताया गया कि होनी अर्थात भाग्य को बदलने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। साहस और जीवटता के साथ निरंतर कर्मरत रहने पर ही संसार हमारे पीछे चलता है। 24 मई को 'हृदय की आग' गीत पर चर्चा में कहा गया कि जमाना हमें उठने का अर्थात अपने धर्म के पालन का इशारा कर रहा है। यही श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमें कह रहा है कि पूर्वजों द्वारा स्थापित की गई बलिदानों की परंपराओं की धारा को पुनः प्रवाहित करने के लिए हमें सन्नद्ध होना पड़ेगा। 25 मई को 'चिता जल रही है' गीत के द्वारा कर्त्तव्य पथ में आने वाली चुनौतियों के प्रति साधक को सचेत किया गया और कहा गया कि सभी प्रकार की आसक्तियों पर विजय प्राप्त करके ही क्षत्रिय धर्म का पालन किया जा सकता है। 26 मई को 'अरमानों की दुनिया' गीत का अर्थबोध किया गया और समझाया गया कि अपने अरमानों को सहर्ष जलाकर ही कर्त्तव्य पालन किया जा सकता है। इस मार्ग में कष्टों और परीक्षाओं का आना स्वाभाविक है क्योंकि यह तपस्या का मार्ग है। 27 मई को 'कहो चुकाई' गीत पर चर्चा में हमारी कौम के गौरवमयी इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बताते हुए पूर्वजों के शौर्य को नमन किया गया। 28 मई को 'प्यासे प्राणों की ज्योति' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि अपने प्रेरक का छाया की भांति अनुसरण करना ही अनन्य भाव है और अनन्य भाव से ही हमारे लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।

आयुर्वेद के आधार पर बताए स्वस्थ जीवन जीने के उपाय

28 मई को शिविर में अष्टांग आयुर्वेद धाम, तलाजा के संचालक महेन्द्र सिंह सरवैया पहुंचे और शिविरार्थियों को आयुर्वेद के आधार पर स्वस्थ और निरोगी जीवन जीने के उपाय बताए। उन्होंने कहा कि यदि हम हवा, पानी और भोजन को ग्रहण करने में सावधानी बरतें तो हमारे अनेक रोग नष्ट हो जाएंगे। पानी को खाना और खाने को पीना - यह सूत्र देते हुए उन्होंने पानी को मुंह में रखकर उसमें लार का भली प्रकार मिश्रण करके ही पीने और भोजन के प्रत्येक निवाले को 32 बार चबा कर ग्रहण करने की बात कही। उन्होंने गाय के दूध, घी और गौमूत्र का शास्त्रीय महत्त्व भी समझाया और इनके नियमित उपयोग के लिए शिविरार्थियों से आग्रह किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में सभी से भारतीय संस्कृति के सच्चे संवाहक बनकर कार्य करने का आह्वान किया, साथ ही शिविरार्थियों द्वारा रखी गई अनेक प्रकार की शारीरिक समस्याओं के समाधान के लिए परामर्श भी दिया।

पूर्व मुख्यमंत्री वाघेला पहुंचे शिविर में

गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकर सिंह वाघेला आज 28 मई को गांधीनगर में चल रहे श्री क्षत्रिय युवक संघ के उच्च प्रशिक्षण शिविर में पहुंचे और माननीय संघप्रमुख श्री से भेंट की। उन्होंने शिविरार्थियों से यहां मिले प्रशिक्षण के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को प्रभावकारी बनाने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदार बनने की बात कही।

यज्ञ के द्वारा की गई सर्व कल्याण की प्रार्थना

उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रतिदिन घटानुसार यज्ञ का आयोजन श्री क्षत्रिय युवक संघ की संक्षिप्त दैनिक यज्ञ विधि पुस्तिका में वर्णित विधि के अनुसार किया गया जिसमें बाह्य यज्ञ के माध्यम से अंतर में निर्मलता लाने, भीतरी दिव्यता के प्रकटीकरण, अपने धर्म का पालन करते हुए सभी दायित्वों को पूरा करने की क्षमता देने और जीवन को सदैव उन्हीं की ओर बढ़ाने की प्रार्थना परमपिता परमेश्वर से की गई।

संपादकीय

परिणाम की परवाह किए बिना संघर्ष प्रियता है क्षात्र वृत्ति

लोकसभा चुनाव समाप्त हो चुके हैं और जिस दिन पथप्रेरक का यह अंक पाठकों के हाथ में पहुंचेगा उस दिन इन चुनावों के परिणाम घोषित हो चुके होंगे। भारत राष्ट्र की शासन व्यवस्था का संचालन अगले पांच वर्ष तक कौन करेगा, अथवा सत्ता के दावेदार सभी पक्षों के आचरण को देखकर यह भी कहना गलत नहीं होगा कि अगले पांच वर्ष तक शासन व्यवस्था पर किसका कब्जा रहेगा, यह भी संभवतः उस दिन स्पष्ट हो चुका होगा। पिछले दो माह से देश में चल रहे राजनीतिक संघर्ष के उन्माद का शोर विजेताओं के विजय-घोष और पराजितों की हार की निराशा से उपजी प्रतिक्रियाओं से प्रतिस्थापित हो जाएगा। परिणामों को देखकर उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों के विश्लेषण के दौर चलेंगे, सफलता का श्रेय लेने और असफलता का दायित्व दूसरों पर डालने की होड़ मचेगी और फिर कुछ दिनों में यह सारा शोर भी खो जाएगा। हमने भी एक समाज के रूप में इन चुनावों में जो लड़ाई लड़ी उसके स्थूल परिणाम भी चुनाव परिणाम के साथ स्पष्ट हो रहे हैं। समाज के सदस्य के रूप में अपना मानकर जिनको जिताने के लिए हमने भरसक प्रयास किया, समाज के जिन विरोधियों को हमने हराने के लिए घोषित लड़ाई लड़ी, राजनीतिक दलों को समाज की एकता का संदेश समाज सापेक्ष मतदान द्वारा देने का जो निश्चय हमने किया, उन सब की बाह्य सफलता या असफलता भी हमारे सामने आ रही है। लेकिन यह बाह्य सफलता या असफलता वास्तव में महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि हमने लड़ने का निर्णय लिया और उस निर्णय पर डटे रहे, यह कहीं अधिक महत्वपूर्ण है और यही हमारी वास्तविक और दुरगामी प्रभाव वाली सफलता है। वास्तविक असफलता लड़कर पराजित होने में नहीं बल्कि संभावित पराजय के भय से लड़ना ही छोड़ देने में है। दो या अधिक पक्षों में जब भी संघर्ष होता है तो कोई पक्ष विजयी भी होता है और कोई पक्ष पराजित भी होता है। जिन लक्ष्यों को लेकर संघर्ष किया जाता है उन लक्ष्यों की कभी पूर्ण रूप में प्राप्ति हो जाती है, कभी आंशिक रूप में ही प्राप्ति होती है तो कभी बिल्कुल खाली हाथ भी रहना पड़ सकता है। संघर्ष के परिणामों की यह संभावनाएं संघर्ष की ही भांति शाश्वत है। संघर्ष में निश्चित विजय जैसी कोई वस्तु नहीं होती क्योंकि यदि किसी की विजय पहले से निश्चित ही हो तो फिर उसे संघर्ष कहना ही अनुचित होगा। संघर्ष में अप्रत्याशित परिणाम भी आते हैं तो निरंतर चलते रहने वाले संघर्षों में विजयी और पराजित की स्थितियां भी बदलती रहती हैं। जो आज पराजित है वह कल विजयी भी हो सकता है तो वहीं जो आज विजयी है वह कल पराजित की श्रेणी में भी आ सकता है। इसलिए महत्वपूर्ण विजय या पराजय नहीं बल्कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष में जुटना है। यही हमारा कर्तव्य है, यही विकास क्रम में निरंतर आगे बढ़ते रहने की आवश्यक शर्त भी है। विपरीत परिणाम के भय से जो संघर्ष से पीछे हटता है वह जड़गामी बनकर विकास क्रम में बहुत पीछे रह जाता है। क्षत्रिय के लिए तो ऐसी कायरता कभी भी वरैण्य नहीं रही है। भगवान कृष्ण द्वारा गीता में वर्णित क्षत्रिय के स्वाभाविक सात गुणों में एक गुण संघर्ष से पीछे न हटना है। इसी संदेश का पालन करते हुए हमारे पूर्वजों ने भी कभी पलायन का मार्ग नहीं अपनाया बल्कि अपने सामने उपस्थित चुनौतियों से निरंतर संघर्ष में जुटे रहकर ही वह इतिहास निर्मित किया जिसे थाती के रूप में पाकर हम गौरवान्वित होते हैं। उन्होंने परिणामों की नहीं बल्कि अपने कर्त्तव्य की ही परवाह की। न पराजय का दंश कभी उनकी संघर्षप्रेरणा को क्षुब्ध कर सका और न विजय का दंभ उन्हें कभी कर्त्तव्य भ्रष्ट कर सका। निरंतर अपने कर्त्तव्य के पालन के लिए किए गए संघर्षों ने ही संसार को उनके पीछे चलने के लिए प्रेरित किया।

इसीलिए इन चुनावों के परिणाम यदि हमारे प्रतिकूल आए तो भी हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है और यदि अनुकूल आए तो भी गर्वोन्माद से भरने की भूल हमें नहीं करनी है, बल्कि हमारा मुख्य उद्देश्य इन चुनावों में दिखाई गई सामाजिक संघर्ष की प्रवृत्ति और उसकी क्षमता को बढ़ाना ही होना चाहिए। क्योंकि अपने कर्त्तव्य को भूलकर किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में पहुंचे समाज को यदि इससे बाहर निकालना है तो उसके लिए उसमें संघर्ष और जुझारूपन की प्रवृत्ति विकसित करनी ही होगी। ऐसा करते समय यह भी स्मरण रखने की आवश्यकता है कि परिणाम सापेक्षता सदैव संघर्ष की क्षमता को कम करती है इसलिए हमारा चिंतन संघर्ष के परिणाम के संबंध में नहीं बल्कि संघर्ष के औचित्य व अनौचित्य पर ही होना चाहिए। यदि हमारी दृष्टि में संघर्ष उचित है, आवश्यक है और सामाजिक चेतना इस आवश्यकता की पुष्टि करती है तो हमें उस संघर्ष में पूर्ण मनोयोग से जुटना ही चाहिए। इन चुनावों में हमने ऐसा ही करने का प्रयास किया और इस प्रयास से यह विश्वास और अधिक दृढ़ हुआ कि हमारे भीतर लड़ने का वंशानुगत गुण अभी भी संरक्षित है। अब इस गुण को समाज में और अधिक पुष्ट और प्रोत्साहित करने के लिए कार्य किए जाने की आवश्यकता है क्योंकि अपने प्रति होने वाले अन्याय का जो समाज प्रतिकार नहीं करता उसे गुलाम बनाने में शत्रु सफल हो जाते हैं। राजनीतिक रूप से समाज के विरोधियों के प्रति इस बार प्रतिकार का जो स्वर समाज में मुखर हुआ, सत्तासीन शक्तियों के विरुद्ध बिना परिणाम की चिंता किए जिस प्रकार हम खड़े हुए, उसने समाज की सामूहिक चेतना की जागृति का प्रमाण दिया है। जो जागृत समाज अपने सामने उपस्थित चुनौतियों को पहचानकर उन्हें स्वीकार करता है, उसी के लिए आगे बढ़ने के मार्ग खुलते हैं।

यद्यपि परिणाम की चिंता ना करते हुए लड़ने का साहस दिखाना निश्चित रूप से महत्वपूर्ण गुण है तथापि यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि लड़ाई किसी उद्देश्य के लिए ही लड़ी जाती है, भले ही उस उद्देश्य की प्राप्ति तत्काल हो अथवा ना हो, लेकिन लड़ाई अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं है। यदि लड़ाई ही उद्देश्य बन जाए तो वह हमारे स्वभाव को अतिप्रतिक्रियावादी बनाकर हमारी ऊर्जा के व्यर्थ बहने का मार्ग खोल देती है। अतिप्रतिक्रियावादी होने से हमारे पास महत्वपूर्ण अवसरों पर प्रयोग करने के लिए आवश्यक शक्ति और एकाग्रता का अभाव हो जाता है। ऐसी स्थिति उत्पन्न ना हो, इसकी सावधानी समाज में संघर्षशीलता के गुण को प्रोत्साहित करते समय रखने की आवश्यकता है। इसीलिए अग्रजों द्वारा जोश के साथ होश भी रखने की शिक्षा दी जाती रही है। हम लड़ें, पूरे जोश के साथ लड़ें, परिणाम की परवाह किए बिना लड़ें, किंतु होश ना खोएं, अन्यथा लड़ने का हमारा गुण ही हमारी शक्तियों का विनाशक बन जाएगा। यह होश, यह जागृति निरंतर अभ्यास से ही हमारे व्यक्तित्व में आ सकती है। इसी निरंतर अभ्यास की प्रक्रिया श्री क्षत्रिय युवक संघ में सतत रूप से संचालित होती है, साथ ही हमारी संघर्षशीलता एवं जुझारूपन को प्रबल बनाने का अभ्यास भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के सर्वांगीण शिक्षण में सम्मिलित है। इसलिए आएं, हम भी इस शिक्षण के अंग बनें और जोश व होश के समन्वय के साथ समाज के लिए लड़ना सीखें।

रात्रि कार्यक्रमों में हुई प्रतिभा की अभिव्यक्ति

उच्च प्रशिक्षण शिविर में रात्रि के भोजन के पश्चात एक घंटे के रात्रि कार्यक्रम में स्वयंसेवकों की विविध प्रकार की प्रतिभाओं को अभिव्यक्त होने का मंच प्राप्त होता है। विनोद सभा में घटनुसार विनोदपूर्ण लघु नाटिकाएं तैयार कर उनकी प्रस्तुति दी गई और अपनी अभिनय क्षमता और रचनात्मकता के माध्यम से लोकरंजन किया गया। शास्त्रार्थ कार्यक्रम में सद्साहित्य के अध्ययन से प्राप्त की गई जानकारियों के आधार पर एक दूसरे से प्रश्नोत्तर किए। दोहा-श्लोक-चौपाई के कार्यक्रम में स्वयंसेवकों द्वारा वीर रस, भक्ति रस, करुण रस आदि के दोहे, चौपाई और श्लोक सुनाए। इसी प्रकार मेरी चाह, अंत्याक्षरी, शिविर अनुभव आदि कार्यक्रम भी हुए।

(पृष्ठ दो का शेष)

मेरी साधना... साधक के भयानक शत्रु के रूप में ज्ञानेंद्रियां रूप, रस, राग, गंध और स्पर्श के प्रलोभनों से उसे साधना-भ्रष्ट करने का प्रयत्न करती है। तब साधक को शमन-दमन के प्रयोग से अपने मन को नियंत्रित करना चाहिए। धैर्य, तपस्या, दृढ़ संकल्प, संयम, स्थित चित्त, अनन्य भाव, मनोबल आदि गुणों को अपनाकर ही साधक साधना के मार्ग पर निरंतर गतिमान रह सकता है। सभी प्रकार की आसक्तियों का त्याग, बलिदान के लिए तत्पर होना, हठव्रती होकर ममता पर विजय पाना साधक के लिए आवश्यक है। ऐसे साधक ही अपने सर्वस्व की आहुति देकर राष्ट्र यज्ञ की क्षीण पड़ती ज्वाला को पुनः प्रज्वलित कर सकते हैं। यह भी बताया गया कि साधना के मार्ग पर विरोध का आना भी स्वाभाविक है। यह विरोध सैद्धांतिक धरातल पर ना होकर आत्म लघुत्व की हीन भावना से जन्मा हुआ होता है जिसकी साधक को चिंता नहीं करनी चाहिए। साधक को अपने आत्मसंकल्प से समस्त विरोधों को जीतना चाहिए। अंतर्मुखी साधना से ही अजेय और अखंड शक्ति का निर्माण होता है। साधक को पराजय से कभी भयभीत नहीं होना चाहिए क्योंकि साधना संघर्ष का मार्ग है जिस पर अनेक असफलताओं का सामना करना पड़ता है लेकिन फिर से नए उत्साह से संघर्ष में जुट जाना ही साधक का गुण होना चाहिए। प्रयत्न और पुरुषार्थ से पराजय को विजय में बदलने वाला ही दृढ़व्रती साधक होता है। अपने शरीर, मन और आत्मा को निश्चित सांचे में ढालने वाले साधकों पर ही ईश्वर की कृपा होती है। ऐसा साधक ही अपने लक्ष्य तक पहुंचता है और ऐसे साधकों के संगठन से ही हमारी क्षात्र-परंपरा पुनः जाज्वल्यमान बन सकती है।

फार्म-4 (नियम-8)

1. प्रकाशन स्थान	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
4. प्रकाशक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
5. सम्पादक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर,झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

लक्ष्मणसिंह
प्रकाशक

01.03.2024

शिविर दर्शन के लिए पहुंचे गुजरात के समाजबंधु

उच्च प्रशिक्षण शिविर गांधीनगर में गुजरात सौराष्ट्र कच्छ संभाग, मध्य गुजरात संभाग और उत्तर गुजरात संभाग से संघ के लगभग 100 सहयोगी समाजबंधु शिविर दर्शन के लिए पहुंचे और दोपहर के भोजन से लेकर रात्रि भोजन तक शिविर की सभी गतिविधियों को देखा एवं उनसे प्रभावित हुए। माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के साथ उन सभी की बैठक भी हुई जिसमें महावीर सिंह जी ने कहा कि गुजरात में चल रहे राजपूत अस्मिता आंदोलन ने समाज की ऊर्जा, एकता और सामाजिक भाव को बढ़ाया है लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि इस ऊर्जा और सामाजिक भाव का कोई व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए दुरुपयोग न कर ले। हनुमंत सिंह मिठड़ी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि समाज की वर्तमान स्थिति को देखकर सभी के दिल में पीड़ा जगती है। इस पीड़ा को दूर करने के लिए हमें मिलकर प्रयास करना चाहिए। पृथ्वी सिंह ने भी अपने विचार रखे। लेखावाड़ा में भारतीय एवं गुजरात राज्य की प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी हेतु चल रहे कोचिंग संस्थान के निदेशक अशोक सिंह परमार, आईपीएस अधिकारी बलदेव सिंह भैंसाणा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति इस दौरान उपस्थित रहे।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि **(कर्मचारी वर्ग)** (स्ववित्तपोषित)	05.06.2024 से 08.06.2024	श्री देगराय मंदिर परिसर, रासला, **जैसलमेर** विशेष : शिविर में पंजीकरण के लिए श्री झबर सिंह लूणा खुर्द से संपर्क करें। **मो.-9799137768**
02.	प्रा.प्र.शि **(बालक)**	05.06.2024 से 08.06.2024	श्री महाराणा प्रताप सभा भवन, लालबाग, श्रीनाथद्वारा, जिला-राजसमंद। संपर्क सूत्र - श्री ईश्वर नाथ सेदरां - 9680334951 श्री गोविन्द सिंह चुण्डावत खेडी - 9462678999 श्री शूरवीर सिंह सोडावास - 8003565679 श्री कुंजबिहारी सिंह बैरण - 9001841084
03.	प्रा.प्र.शि **(बालक)**	08.06.2024 से 11.06.2024	श्री केरेश्वर महादेव, लुणदा, कानोड़, जिला उदयपुर संपर्क सूत्र - श्री कैलाश सिंह लुणदा-7727828742 श्री प्रदीप सिंह लुणदा 6350544420 श्री नरेन्द्र सिंह लुणदा 8239403150 श्री शंकर सिंह अरनियां - 9929545727
04.	प्रा.प्र.शि **(बालक)**	11.06.2024 से 14.06.2024	पदमगढ नीनोर, तहसील - दलोट, जिला - प्रतापगढ़ संपर्क सूत्र - श्री राजेन्द्र सिंह नीनोर - 7874714143 श्री दिग्विजय सिंह चिकलाड़ - 9602232556 श्री अजीत सिंह बोरदिया - 9179974719 श्री राजकृष्ण सिंह - 9001919700 श्री हेमंत सिंह पलासिया - 9753324685
05.	प्रा.प्र.शि **(बालक)**	12.06.2024 से 15.06.2024	सोढाकोर, चांधन (जैसलमेर)

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

प्रिया राठौड़ ने अफ्रीका में किया भारत का प्रतिनिधित्व

सीकर जिले के लोसल क्षेत्र के प्रतापपुरा गांव की निवासी प्रिया राठौड़ ने पश्चिमी अफ्रीकी देश बेनिन के कोटोनोउ में यूएनएफपीए इंडिया द्वारा अप्रैल में आयोजित आईसीपीडी - 30 ग्लोबल यूथ डायलॉग कार्यक्रम में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस कार्यक्रम में दुनिया भर से 400 युवाओं ने भाग लिया था जिनमें वे एकमात्र भारतीय थी। उन्होंने कार्यक्रम में महिला स्वास्थ्य और लैंगिक हिंसा के मुद्दों पर अपनी बात रखी। प्रिया ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लोसल से प्राप्त की एवं बीएससी करने के बाद वर्तमान में घरेलू हिंसा और मानवाधिकार विषयों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है। वे संयुक्त राष्ट्र की प्रजनन स्वास्थ्य एजेंसी - यूएनएफपीए के भारत में सक्रिय युवा सलाहकार समूह (YAG) की सदस्य हैं।

लोकसंग्रहकर्त्ता शिक्षक की समस्याओं और उनके समाधानों का विवेचन

लोकसंग्रह के कार्य में लोकशिक्षण का कार्य भी निहित है। एक लक्ष्य निश्चित कर उसकी ओर बढ़ने वाले लोकसंग्रहकर्त्ता को अन्य पथिकों को भी उसी राह पर लाने के लिए प्रेरित करने के लिए शिक्षक का दायित्व निभाना होता है। यह शिक्षण किसी निश्चित पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं होता बल्कि जीवनव्यापी होता है, इसीलिए शिक्षक के इस दायित्व को निभाते समय उसके सामने अनेक प्रकार की समस्याएं आती हैं। पूज्य श्री तनसिंह जी ने लोकसंग्रह करने वाले शिक्षक के सामने आने वाली ऐसी संभावित समस्याओं और उनके समाधानों का वर्णन 'शिक्षक की समस्याएं' पुस्तक में किया है। उच्च प्रशिक्षण शिविर में इस पुस्तक के विभिन्न अध्यायों का क्रमवार विवेचन करते हुए उन पर चर्चा की गई। प्रथम अध्याय 'पूर्व धारणाएं' पर चर्चा में बताया गया कि ज्ञान और सत्य एक ही है और इनका स्वरूप गत्यात्मक है। विश्वास भी इसी प्रकार निरंतर चलने वाला मानसिक कर्म है लेकिन यदि ऐसा कोई विश्वास, ज्ञान अथवा सत्य जड़ बनकर पूर्व धारणा में परिवर्तित हो जाता है तो वह साधना की गति को अवरुद्ध कर देता है। शिक्षक को ऐसी सभी पूर्व धारणाओं से अपने को मुक्त रखना आवश्यक है और ऐसा वह तभी कर सकेगा जब वह ज्ञान के प्रति अपने आप को नमनशील बनाएं, अपना मस्तिष्क खुला रखे। शिक्षक ने यदि अपनी साधना में कोई लापरवाही नहीं की है तो उसके लिए पूर्व धारणाओं की समस्या पैदा नहीं होगी और यदि कहीं ऐसी लापरवाही के कारण यह समस्या पैदा हो गई है तो उसकी कारणभूत लापरवाही और जड़ता को पहचानकर उसे दूर हटाकर ही इस समस्या का समाधान हो सकता है। द्वितीय अध्याय 'व्यापक आवश्यकताएं' पर चर्चा में बताया गया कि लोकसंग्रह करते हुए शिक्षक जिस संगठन के निर्माण का कार्य कर रहा है, उस संगठन का लक्ष्य पश्चिम की भांति जीवन के किसी एक पक्ष को सरल बनाना या किसी एक समस्या को हल करना नहीं है बल्कि भारतीय दर्शन के अनुरूप जीवन की उच्चतम आवश्यकताओं की पूर्ति और जीवन की सभी समस्याओं का समाधान ही उसके संगठन का हेतु है। इसके लिए शिक्षक का कार्यक्षेत्र मूल रूप में उससे शिक्षण लेने वाला शिक्षार्थी और व्यापक रूप में समाज होता है। अतः शिक्षक को शिक्षार्थी एवं समाज की व्यापक आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है जिससे वह उन आवश्यकताओं की पूर्ति की संभावना अपने शिक्षण से होने का विश्वास शिक्षार्थी एवं समाज में जागृत कर सके। इस विश्वास के आधार पर ही उसके मुख्य शिक्षण की आधार भूमि खड़ी होती है। शिक्षार्थी और समाज की भौतिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को तानाशाही प्रवृत्ति अपना कर दमित नहीं किया जा सकता, बल्कि शिक्षक को इन आवश्यकताओं में रुचि लेकर इनमें से यथार्थ आवश्यकताओं की पूर्ति का यथासंभव प्रयास शिक्षण के मुख्य कार्य को बाधित किए बिना करना चाहिए। तृतीय अध्याय 'विनिमय दोष' में बताया गया कि शिक्षण के लिए प्रचार और उपदेश की पद्धतियों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक उपायों द्वारा शिक्षार्थी की ग्रहण शक्ति को जागृत करना चाहिए। इन उपायों को काम में लेते समय शिक्षक और साधक के बीच जो विनिमय होता है उसमें विभिन्न कारणों से दोष उत्पन्न हो सकता है। यह दोष शिक्षक की ओर से भी हो सकता है और साधक की ओर से भी। विनिमय दोष की स्थिति होने पर उसकी शुद्धि का उपाय अंतर्संघर्ष ही है जिसमें मूल्य शुद्धि और आत्म शुद्धि शामिल है। यदि तब भी विनिमय दोष दूर न हो तो अंतिम उपाय के रूप में विकृत साधक को साधना प्रांगण से दूर कर देना चाहिए जिससे उसकी विकृति की कीमत पूरे समूह और समाज को न चुकानी पड़े। चतुर्थ अध्याय 'कोलाहल' पर चर्चा में परंपरावादी और विकासवादी दृष्टिकोण का अंतर स्पष्ट करते हुए बताया गया कि शिक्षक को अपने साध्य के प्रति परंपरावादी दृष्टिकोण रखते हुए सदैव दृढ़ रहना है किंतु साधन के परिप्रेक्ष्य में विकासवादी दृष्टिकोण रखते हुए नवीन संभावनाओं का भी अपने विवेक द्वारा परीक्षण करना चाहिए और उपयुक्त होने पर नवीन साधन को अपनाना भी चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया जाए तो साधना का क्षेत्र कोलाहल का क्षेत्र बन जाता है। यदि ऐसा कोलाहल पैदा हो जाता है तो शिक्षक को नीरवता और शब्द संयम का प्रयोग शिक्षण के लिए करना चाहिए। ऐसा वही शिक्षक कर सकेगा जो स्वयं आत्मवशी और धीर हो। पंचम अध्याय 'पात्र की परख' में बताया गया कि जिस शिक्षार्थी को शिक्षण दिया जा रहा है उसकी पात्रता की जांच भी शिक्षक को करनी चाहिए कि वह किस प्रकार के शिक्षण के लिए योग्य है, उसकी क्या क्षमताएं हैं। ऐसा न करके सभी को एक ही लाठी से हांके जाने पर शिक्षण निष्फल हो जाता है। शिक्षक को शिक्षार्थी की पात्रता उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उसके आचरण से ही जांचनी चाहिए। षष्ठम अध्याय 'मंत्रबल का अभाव' में समझाया गया कि शिक्षक की प्रभावशक्ति ही उसका मंत्रबल है। ध्येय के प्रति अनन्य भाव, उत्साह और कर्मनिष्ठा से यह प्रभावशक्ति जागृत होती है। यदि यह प्रभावशक्ति क्षीण हो जाए तो उसे पुनः प्रबल बनाने के लिए शिक्षक को तपस्या का मार्ग अपनाना चाहिए। सप्तम अध्याय 'निष्क्रिय आलोचना' पर चर्चा में कहा गया कि लोकसंग्रह का कार्य करते समय कुछ ऐसे लोगों का मिलना भी स्वाभाविक है जो साधना के मार्ग पर नहीं चल पाते और इसलिए निष्क्रिय आलोचना का मार्ग अपना लेते हैं। शिक्षक को ऐसे आलोचकों के कुतर्कों की ओर कभी ध्यान न देकर जिज्ञासु और कर्मनिष्ठ साधकों को विकास हेतु मार्गदर्शन देने में ही अपनी ऊर्जा प्रयुक्त करनी चाहिए। अष्टम अध्याय 'अंतर्विरोध' में बताया गया कि यदि शिक्षक अपने उद्देश्य में प्रेरणा खो दे अथवा शिक्षार्थियों में लक्ष्य के प्रति उत्साह नष्ट हो जाए तो अंतर्विरोध की समस्या उत्पन्न हो जाती है। यह समस्या हल तभी हो सकती है जब शिक्षण के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली श्रद्धा और संस्कारों को बौद्धिक विचार का भी पूर्ण समर्थन और संरक्षण मिलना प्रारंभ हो जाए। नवम अध्याय 'क्षीण संकल्प' पर चर्चा में बताया गया कि संकल्प ही ध्येयनिष्ठा और कर्मशक्ति का आधार है। इसके क्षीण होने पर शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव भी क्षीण हो जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक को धैर्य और तप द्वारा अपनी ओजस्विता को पुनः जागृत करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को संघर्ष का मार्ग अपनाना पड़े तो उसमें भी नहीं हिचकना चाहिए। दसवें अध्याय 'प्रीति और नीति' में स्पष्ट किया गया कि शिक्षण को सफल बनाने के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है कि शिक्षक शिक्षार्थी के हृदय को जीते। यह कार्य तर्क अथवा अन्य किसी लाघव विधि से नहीं बल्कि निश्छल और अशर्त प्रेम से ही संभव है। आवश्यक होने पर अपवाद रूप में शिक्षण में नीति अर्थात चतुराई, योग्यता आदि के प्रयोग से भी आकर्षण पैदा किया जा सकता है किंतु शिक्षक को प्राथमिकता सदैव निश्छल प्रेम को ही देनी चाहिए। ग्यारहवें अध्याय 'दण्ड और सलाह' पर चर्चा में बताया गया कि शिक्षक के कार्य में कुछ अंश में प्रशासन का कार्य भी शामिल है इसलिए अन्य उपाय शेष न रहने पर सृजन के प्रयोजन से उसे कभी-कभी दण्ड का सहारा लेना पड़ता है। लोकसंग्रह के शिक्षक को शारीरिक दण्ड का कभी प्रयोग नहीं करना चाहिए। दण्ड का स्वरूप मानसिक अथवा आध्यात्मिक होना चाहिए। साधक में सलाह देकर अन्यों के उत्तरदायित्व में दखल देने की प्रवृत्ति विकसित न हो, यह भी शिक्षक को ध्यान में रखना चाहिए। अंतिम प्रकरण 'परीक्षा' में बताया गया कि उर्ध्वगति की साधना में आंख बंद कर विश्वास करने की अपेक्षा शिक्षण की प्रगति और प्रभाव को जांचने के लिए परीक्षा भी आवश्यक है। परीक्षा का अर्थ लिखित अथवा पारंपरिक प्रकार की परीक्षा नहीं बल्कि मानव व्यवहार और संवेदनाओं के आधार पर मानव चरित्र का मूल्यांकन करना ही वास्तविक परीक्षा है।

(पृष्ठ दो का शेष)

बौद्धिक सत्र...23 मई को ₹जीवित समाज₹ विषय पर प्रवचन में जीवित समाज के परीक्षण की कसौटियां - स्वधर्म की मान्यता, सांस्कृतिक मान्यताएं, संवेदना, आत्मीयता, ज्ञान-पिपासा, नव निर्माण की भावना, मान बिंदुओं का आदर, महापुरुषों की परंपरा और प्रतिहिंसा की भावना आदि बताई गई और हमारे समाज की वर्तमान स्थिति का इस परिप्रेक्ष्य में परीक्षण किया गया और बताया गया कि हमारा समाज जीवित है लेकिन वह पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं है, रूग्ण है। इस रूग्णता को दूर करने और समाज को पुनः स्वस्थ बनाने के लिए ही संघ कार्य कर रहा है। 24 मई को ₹अनुशासन₹ विषय पर प्रवचन में कहा गया कि अनुशासन का अर्थ है हमसे वरिष्ठ एवं श्रेष्ठ के पीछे चलना, उसकी आज्ञाओं का पालन करना अथवा शासन के पीछे चलना। इस प्रकार के अनुशासन को अपनाए बिना संगठित शक्ति का निर्माण संभव नहीं है। संघ में इसीलिए अनुशासन के अभ्यास को विशेष महत्त्व दिया जाता है। 25 मई को ₹उत्तरदायित्व₹ के बारे में समझाते हुए कहा गया कि अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करना मनुष्य की श्रेष्ठता का परिचायक है। अपने उत्तरदायित्व को पहचान कर उसके प्रति गंभीर होना श्रेष्ठ व्यक्ति का गुण है। अपने उत्तरदायित्व की अवहेलना करने से पतन के द्वार खुलते हैं। उत्तरदायित्व के पालन की प्रेरणा कृतज्ञता के भाव से जागती है, इसलिए हमें सदैव अपने परिवार, समाज, सहयोगी, प्रकृति आदि के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। 26 मई को ₹हमारी संस्कृति₹ विषय पर प्रवचन में भारतीय संस्कृति (जो वास्तव में क्षत्रिय संस्कृति ही है) की विशेषताओं के बारे में बताया गया कि किस प्रकार भारत में हमारे पूर्वजों द्वारा उन मूल्यों और आदर्शों की स्थापना की गई जिन पर चलने से पूरा संसार भारत को अपना गुरु मानने लगा। आज उन आदर्शों और मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। उन्हें जनमानस में पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए ही पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। 27 मई को ₹हमारा ऐतिहासिक अंतरावलोकन₹ विषय पर प्रवचन हुआ जिसमें हमारे गौरवशाली इतिहास की समीक्षात्मक जानकारी दी गई और इतिहास के आदर्श उदाहरणों से प्रेरणा प्राप्त करके कर्मरत होने और इतिहास में विभिन्न अवसरों पर हुई भूलों से शिक्षा लेकर उनसे बचने की बात कही गई। 28 मई को ₹नेतृत्व₹ के बारे में बताया गया कि नेतृत्व कोई निर्बाध अधिकार नहीं बल्कि एक गहन उत्तरदायित्व है। सर्वश्रेष्ठ नेता वही है जो आदेश अथवा उपदेश से नहीं बल्कि अपने आचरण से अपने पीछे चलने वालों को शिक्षा देता है। श्रेष्ठ अनुचरत्व ही श्रेष्ठ नेतृत्व के निर्माण की आधारभूमि है क्योंकि जो सिपाही की योग्यता नहीं रखता वह सेनापति नहीं बन सकता।

(पृष्ठ एक का शेष)

पूज्य तनसिंह...

उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने गांधीनगर (गुजरात) में आयोजित युवकों के उच्च प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन प्रदत्त स्वागत उद्बोधन में कही। उन्होंने कहा कि यहां हम कुछ लेने आए हैं, साथ ही कुछ छोड़ने भी आए हैं। हमारा उद्देश्य, हमारा मार्ग, अनुशासन, उत्तरदायित्व, लोकसंग्रह, नेतृत्व, हमारी संस्कृति, इतिहास आदि सब विषयों की बात हमको यहां समझाई जाएगी। समझ वो पायेगा जो जागृत है। जो जागता है, वह पाता है और जो सोता है, वह खोता है। जो कुछ यहां बताया जाएगा, उसका व्यावहारिक अभ्यास भी यहां करवाया जाएगा। उस अभ्यास को यहां से लेकर जाना है। शिविर में रहते हुए हमसे अनेक गलतियां हो जाती हैं, उन पर हमारे शिक्षक, घटनायक, पथक शिक्षक आदि टोकेंगे। वह टोकना हमको बुरा नहीं लगे, क्योंकि वह हमारे हित के लिए किया जा रहा है। हमारे भीतर जो गंदगी है, उसे हमें छोड़ना है। हमारे भीतर जो भी कचरा है वह अपने शिक्षक के सामने उद्घाटित कर दें, उसे दे दें तो वह छूट जाएगा। इसमें कंजूसी करने की आवश्यकता नहीं है। युवकों का बारह दिवसीय उच्च प्रशिक्षण शिविर मध्य गुजरात संभाग में गांधीनगर के राधेजा में स्थित गांधीनगर इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल के प्रांगण में 18 मई को प्रारंभ हुआ। शिविर का संचालन माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास द्वारा किया गया। उन्होंने सभी शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। शिविर में प्रारंभ से राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, हरियाणा आदि राज्यों के 350 शिविरार्थियों ने 18 मई से प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविरार्थियों को 42 घटों और 12 पथकों में बांटकर प्रशिक्षण दिया गया। 23 मई को पूर्व स्वीकृति प्राप्त कर 100 स्वयंसेवक शिविर में और शामिल हुए जो 29 मई तक शिविर के सभी कार्यक्रमों में शामिल हुए। प्रतिदिन प्रातःकाल 4 बजे जागरण से लेकर रात्रि 10 बजे शयन तक विभिन्न गतिविधियों यथा - जागरण गीत, प्रातःकालीन वंदना, प्रातःकालीन संघर्षपूर्ण खेल, समास्या, यज्ञ, अर्थबोध, बौद्धिक खेल, बौद्धिक प्रवचन, सायंकालीन चुस्ती-फुर्ती वाले खेल, सायंकालीन प्रार्थना, घटचर्चा, विनोद सभा, अंत्याक्षरी, शास्त्रार्थ, भजन आदि के द्वारा संघदर्शन का व्यावहारिक अभ्यास शिविरार्थियों को कराया गया। शिविर का समापन 29 मई को हुआ।

संघ शिक्षण...

पूरे गुजरात के साथ ही राजस्थान के बाड़मेर, बालोतरा, सांचोर, जालोर, उदयपुर, जोधपुर, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, जयपुर, शेखावाटी, पाली, जैसलमेर आदि जिलों से 110 बालिकाएं शिविर में सम्मिलित हुई। शिविर में विभिन्न सत्रों में बालिकाओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन के बारे में विस्तार से समझाया गया, हमारे इतिहास एवं संस्कृति के बारे में बताया गया, समाज की वर्तमान स्थिति की जानकारी दी गई और समाज के प्रति अपने दायित्व को समझकर उसके पालन की प्रेरणा देते हुए कहा गया कि हमारी पूर्वज माताओं ने जिस कुल गौरव की रक्षा के लिए जौहर में अग्निस्नान जैसी परंपराओं को अपनाया, आज उस गौरव को हमारी वर्तमान पीढ़ी कुसंस्कारों की शिकार होकर नष्ट कर रही है। इस पतन को रोकने के लिए समाज की नवपीढ़ी में क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण करना पड़ेगा। संघ अपने शिविरों व शाखाओं के माध्यम से इस कार्य में जुटा हुआ है लेकिन इस कार्य की शीघ्र सफलता के लिए हमारे परिवारों का वातावरण भी अनुकूल होना आवश्यक है। यह तभी हो सकेगा जब परिवार को संभालने वाली माता स्वयं संस्कारित होगी। इसीलिए हमें यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है क्योंकि आज की बालिका को ही कल की माता का दायित्व निभाना है। शिविर में प्रतिदिन तीन सत्रों में खेलों के द्वारा संघदर्शन के सिद्धांतों का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया। अर्थबोध और समाश्या द्वारा संघ साहित्य पर चर्चा कर समझने का प्रयास किया गया। यज्ञ एवं प्रार्थना द्वारा भावधारा जागृत करने एवं अपने भीतर दिव्यता को पहचानने का अभ्यास किया।

खेलों में किया संघदर्शन के सिद्धांतों का व्यावहारिक अभ्यास

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा प्रतिपादित श्री क्षत्रिय युवक संघ के गूढ़तम दर्शन को स्वयंसेवक के जीवन में ढालने का सरलतम साधन संघ के शिविरों में खेले जाने वाले खेल हैं। न्यूनतम साधनों से खेले जा सकने वाले ये खेल स्वयंसेवक के व्यक्तित्व की अनेक प्रवृत्तियों यथा - संघर्षशीलता, अनुशासन, ईमानदारी, बंधुत्व, सामूहिक सहयोग की भावना आदि को आलोकित करके उसमें संघदर्शन की ग्रहणशीलता को बढाते हैं। गांधीनगर उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान शिविरार्थियों को अनेक पथकों में बांटकर प्रतिदिन तीन सत्रों में खेल खिलाए गए। प्रातःकाल में संघर्षप्रधान खेलों के द्वारा अपनी ऊर्जा और शक्ति के सम्पूर्ण नियोजन और तीव्र संघर्ष के बीच भी अविचलित मनःस्थिति बनाए रखने का अभ्यास किया। दोपहर के विश्राम के बाद बौद्धिक खेलों के सत्र में मानसिक क्षमता, स्मृति और सजगता को बढ़ाने वाले खेल खिलाए गए। शाम के सत्र में चुस्ती-फुर्ती और दौड़ वाले खेल खिलाए गए, साथ ही शाखा का शिक्षण दिया गया। पथक शिक्षकों द्वारा खेलों के दौरान खेलों के उद्देश्य और उनमें निहित शिक्षण पर चर्चा भी की गई। बालिका शिविर में भी प्रतिदिन तीन सत्रों में इसी प्रकार खेल खिलाए गए।

झुंझुनूं के नंदू सिंह हुए लद्दाख में शहीद

झुंझुनू जिले में सूरजगढ़ के समीप रामरख की ढाणी के निवासी भारतीय सैनिक नंदू सिंह शेखावत 8 मई को लद्दाख में अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए शहीद हो गए। वे लद्दाख में आर्मी के गोला बारूद डिपो (एफएडी 41) में ट्रेड्समैन मेट के पद पर कार्यरत थे। 8 मई को डिपो में उनकी ड्यूटी के समय एक बम फटने से वे अपने कुछ साथियों सहित घायल हो गए थे। गंभीर घायल होने पर उन्हें चंडीगढ़ पीजीआई में रेफर किया गया जहां इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। नंदू सिंह सूरजगढ़ महाविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष भी रह चुके थे।

पदम सिंह लूणू के दादीसा का देहावसान

बाईराज कंवर सोढ़ी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक पदम सिंह लूणू के दादीसा **बाईराज कंवर सोढ़ी** जी धर्मपत्नी स्व. श्री जालम सिंह का देहावसान 14 मई 2024 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक भूरसिंह जी मूगड़ा का देहावसान

भूरसिंह जी मूगड़ा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक ***भूरसिंह जी मूगड़ा*** का देहावसान 17 मई 2024 को हो गया। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के दो उच्च प्रशिक्षण शिविर, दो माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं पांच प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। उन्होंने अपना प्रथम शिविर सितंबर 1958 में सिवाना में किया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं साहित्यकार गोरधन सिंह गुढ़ा का देहावसान

गोरधन सिंह जी गुढ़ा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **गोरधन सिंह जी गुढ़ा** का देहावसान 23 मई 2024 को हो गया। वे ख्यातिनाम साहित्यकार एवं शिक्षाविद थे एवं 2022-23 में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा विशिष्ट साहित्यकार सम्मान से भी सम्मानित हुए। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के 10 शिविरों में भाग लिया जिनमें पांच उच्च प्रशिक्षण शिविर, तीन माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर और दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर रहे। दिसंबर 1956 में बिराटिया में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

राजपूत संस्था संकलन समिति के सदस्य पहुंचे शिविर स्थल

गुजरात राज्य की राजपूत संस्थाओं की संकलन समिति के प्रतिनिधियों ने शिविर स्थल पहुंचकर माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास और श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी से भेंट की। समिति की ओर से रमजुभा जाडेजा, अश्विन सिंह सरवैया, प्रद्युम्न सिंह धोलेरा, करण सिंह चावड़ा, सुखदेव सिंह वाघेला, योगेंद्र सिंह जेठवा ने विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा की एवं वर्तमान में गुजरात में चल रहे राजपूत अस्मिता आंदोलन के बारे में जानकारी दी। माननीय महावीर सिंह जी ने आंदोलन में दिखाए जा रहे अनुशासन और एकता की सराहना की और सामाजिक एकता के लिए आपसी संपर्क निरंतर बनाए रखने की बात कही।

उदयपुर में मनाया महारावत महासिंह जी का बलिदान दिवस

सारंगदेवोत फाउंडेशन के तत्वावधान में बांधनवाड़ा युद्ध के नायक महारावत महासिंह कानोड़ का 313वां बलिदान दिवस 14 मई को उदयपुर स्थित जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय में मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम दीनदयाल सिंह लक्ष्मणपुरा के मुख्य आतिथ्य एवं उदय सिंह सिसवी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मंच संचालन नरदेव सिंह कच्छैर द्वारा किया गया। देवेंद्र सिंह भागल एवं कृष्णपाल सिंह भाणपा द्वारा सभी का स्वागत किया गया। गुमान ज्ञान संस्थान से डॉ राम सिंह व जीवन सिंह लक्ष्मणपुरा, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ट्रस्ट से प्रताप कंवर सारंगदेवोत सहित अनेकों सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि कार्यक्रम में शामिल हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

वैशाली में मनाया महाराजा कान्हदेव का स्मृति दिवस

कन्हपुरिया क्षत्रिय राजवंश के मूल पुरुष और कान्हपुर (वर्तमान कानपुर) के संस्थापक महाराज कान्हदेव के स्मृति दिवस पर 17 मई को अखंड राजपूताना संस्थान द्वारा वैशाली (गाजियाबाद) में पुष्पांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आर पी सिंह जादौन, हरिओम सिंह, शक्ति सिंह पुंढीर, नरेंद्र सिंह तोमर सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि महाराजा कान्हदेव के पिता कर्णदेव कन्नौज के महाराजा जयचंद गहड़वार के सेनापति थे जो चंदावर के युद्ध में मुहम्मद गौरी की सेना से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। कान्हदेव ने 1217 ई. में कान्हपुर नगर बसाया जिसे वर्तमान में कानपुर के नाम से जाना जाता है। उनके वंशज कन्हपुरिया क्षत्रिय कहलाए जो वर्तमान में उत्तरप्रदेश के अमेठी, रायबरेली, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर और मध्यप्रदेश के कौशांबी, जौनपुर, प्रयागराज, रीवा, सतना आदि जिलों में निवास करते हैं।

लोहागल में राजपूत समाज ने निकाली दलित कन्या की बिन्दौली

अजमेर के लोहागल गांव में राजपूत समाजबंधुओ द्वारा दलित समाज की कन्या की बिन्दौली निकालकर सामाजिक सद्भावना की पहल की गई। घनश्याम सिंह बनवाड़ा ने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर लोहागल गांव के कैलाश मेघवाल की पुत्री की घोड़ी पर बिठाकर बिन्दौली निकाली।

खेड़ी-तलवाना (हरियाणा) में राजपूत समाज की महापंचायत का आयोजन

हरियाणा में महेंद्रगढ़ जिले के कनीना उपमंडल के खेड़ी तलवाना गांव में 21 मई को राजपूत समाज द्वारा महापंचायत का आयोजन किया गया। ठाकुर पूर्ण सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जो राजनीतिक दल हमारे समाज को सम्मान नहीं देता, उस दल का हमें बहिष्कार करना चाहिए। हमारे इतिहास से छेड़छाड़ करने वालों को जो राजनीतिक दल संरक्षण देता है उस दल को हमें सबक सिखाना चाहिए। उन्होंने लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों को हराने के लिए मतदान करने की बात कही। महिपाल सिंह मकराना ने कहा कि गुजरात में भाजपा सांसद पुरुषोत्तम रुपाला द्वारा राजपूत समाज पर अभद्र टिप्पणी के बाद भी उस पर कोई कार्यवाही न करना समाज के अपमान पर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा सहमति प्रदान करना है। सूरजपाल अम्मू ने कहा कि हरियाणा की 10 लोकसभा सीटों पर राजपूत समाज प्रभाव रखता है। हमें एकजुटता दिखाते हुए समाज के विरोधियों को हराने का प्रयास करना है। कार्यक्रम में एडवोकेट मनदीप खेड़ी, विनोद राणा, रामनिवास बंसल, राहुल तंवर, मोनू तंवर, संजय सिंह, दिनेश तंवर, सतेंद्र शेखावत, रमेश चौहान इसराना, सत्येंद्र सतनाली, सवाई सिंह राठौड़, अनमोल तंवर सहित पूरे जिले से अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

सेवड़ा में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

जोधपुर जिले के बाप क्षेत्र के सेवड़ा गांव में 20 मई को छात्र नेता जितेंद्र सिंह भाटी की तीसरी पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। पूर्व मंत्री भंवर सिंह भाटी और शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी इस अवसर पर उपस्थित रहे और कहा कि रक्तदान ऐसा दान है जो किसी के प्राण बचाने के लिए किया जाता है। हम सभी को रक्तदान अवश्य करना चाहिए। शिविर में कुल 574 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। पूर्व सरपंच भंवर सिंह सेवड़ा, कुंभ सिंह पातावत सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति रक्तदान शिविर में उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org